जब बारिश बदल गई: रेत के नीचे बची आख़िरी बूंदें – पलामू के मनातू प्रखंड की एक कहानी

झारखंड के पलामू जिले के मनातू प्रखंड के नवडीहा पंचायत में बसे मधैया गाँव की सुबहें कभी हरियाली, पशुओं की घंटियों और खेतों की खुशबू से शुरू होती थीं। गाँव में रहने वाले 148 परिवारों की जिंदगी खेती, जंगल और पशुपालन पर टिकी थी। अनुसूचित जाति (SC), अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) और विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (PVTG) समुदाय के लोग पीढ़ियों से प्रकृति के साथ तालमेल बनाकर जीवन जीते आए थे।

गाँव की कुल 321 एकड़ जमीन में लगभग 175 एकड़ खेती योग्य थी। बाकी टांड भूमि थी, जहाँ बरसात के सहारे कुछ फसलें उगाई जाती थीं। गाँव से बहने वाली जिंजोई नदी सालभर पानी देती थी। तालाब, कुएँ और जंगल गाँव की जीवनरेखा थे। जंगल से लकड़ी, चारा, फल और आय मिलती थी, जबकि पशु हर परिवार की सबसे बड़ी पूंजी माने जाते थे। गाँव के बुजुर्ग कहते हैं “उस समय पशु ही हमारा गहना और ATM थे, जरूरत पड़ती तो वही काम आते थे।”

लेकिन धीरे-धीरे सब बदलने लगा।

जंगल कटने लगे। तालाब और जलस्रोत सूखने लगे। बारिश का मिजाज बदल गया। कभी बारिश बहुत देर से आती, कभी अचानक इतनी तेज़ होती कि खेत बह जाते, और कई बार पूरे मौसम में पर्याप्त पानी ही नहीं गिरता।

गाँव के लोगों ने लगभग 10–12 साल पहले पहली बार महसूस किया कि मौसम अब पहले जैसा नहीं रहा। वर्ष 2015 का सूखा आज भी लोगों की यादों में जख्म की तरह मौजूद है। उस साल कई परिवारों के घरों में सालभर खाने भर का अनाज तक नहीं बचा था।

गाँव के किसान प्रदीप मेहता कहते हैं -

“पहले समय पर बारिश होती थी तो धान और दूसरी फसल अच्छी हो जाती थी। अब खेत सूख जाते हैं, और अगर कुछ उपज भी जाए तो बे-मौसम बारिश उसे खराब कर देती है।”

बारिश में आए इस बदलाव का सबसे ज्यादा असर महिलाओं और बच्चों पर पड़ा। खेती कमजोर होने लगी तो गाँव के पुरुष काम की तलाश में मुंबई, पंजाब और राजस्थान जैसे राज्यों में पलायन करने लगे। पीछे रह गई महिलाएँ घर, खेत, बच्चों और पशुओं की पूरी जिम्मेदारी अकेले संभालने लगीं।

गर्मी के दिनों में पानी का संकट इतना बढ़ जाता है कि महिलाएँ नदी की सूखी रेत खोदकर नीचे जमा थोड़ा-सा पानी निकालती हैं, ताकि घर के पीने और रोजमर्रा के काम के लिए पानी जुटा सकें। यह सिर्फ पानी भरने की कहानी नहीं, बल्कि बदलती बारिश और जलवायु संकट की सबसे दर्दनाक तस्वीर है।

महिलायें हाथो से रेत की खुदाई करके जल की व्यवस्था करती हुई ,जिसमे घंटो की कठिन परिश्रम के बाद थोडा ही पीने के लिए जल एकत्रित कर पाई

मनातु ब्लॉक के डुमरी पंचायत का मार्मिक दृश्य जहा एक महिला पीने का पानी भारती हुई

सीता देवी, जिनके पति बाहर मजदूरी करने गए हैं, कहती हैं –

“पुरुष बाहर चले जाते हैं तो बच्चों की पढ़ाई, घर का खर्च, पशुओं की देखभाल सब कुछ महिलाओं पर आ जाता है। कई बार अपने खाने और स्वास्थ्य का ध्यान भी नहीं रख पाते।”
इस संकट का असर बच्चों पर भी साफ दिखाई देने लगा। कई बच्चे स्कूल छोड़कर घर और खेत के कामों में हाथ बँटाने लगे,बाल मजदूरी करने लगे,बाल विवाह तेजी से बढ़ने लगी जो बल अधिकारों का उल्लंघन दर्शाता है। खेती कमजोर होने से गाँव और आसपास के बाजारों में सब्जियाँ और अनाज कम आने लगे। लोगों की आय घटी और कुपोषण का खतरा बढ़ने लगा।

लेकिन मधैया गाँव ने हार नहीं मानी।

महिला समग्र उत्थान समिति के साथ मिलकर गाँव में ग्राम सभा की बैठकों की शुरुआत हुई। लोगों ने मिलकर सोचा कि बदलते मौसम में कम पानी वाली खेती कैसे की जा सकती है। सामूहिक निर्णय लिया गया कि बड़े पैमाने पर सामुदायिक खेती शुरू की जाए एवं पौधे लगाये जायें।

धीरे-धीरे जो किसान पलायन कर चुके थे, वे वापस लौटने लगे। प्रदीप मेहता, जगतलाल तुरी ,सीताराम भुइयाँ,श्यामलाल भुइयाँ,मुनारिक तुरी,बंगाली भुइयाँ ,सुरेश भुइयाँ,नरेश भारती और अन्य किसानों ने मिलकर लगभग 80 एकड़ भूमि में मक्का की खेती शुरू की। इससे किसानों को अच्छा लाभ मिलने लगा और लोगों का आत्मविश्वास वापस लौटने लगा।

इसी गाँव के किसान अनूप मेहता ने ड्रिप सिंचाई तकनीक अपनाकर स्ट्रॉबेरी की खेती शुरू की। आज वे गाँव से स्ट्रॉबेरी को कोलकाता तक भेज रहे हैं और प्रतिदिन 5000–6000 रुपये तक की आय अर्जित कर रहे हैं। उनकी पहल अब आसपास के किसानों के लिए प्रेरणा बन चुकी है।

आज मध्या गाँव के लोग समझ चुके हैं कि बदलती बारिश के साथ जीने के लिए खेती और जीवन दोनों में बदलाव जरूरी है। समुदाय अब जल संरक्षण की संरचनाए,जलवायु संवेदनशील कृषि और सौर उर्जा संचालित लिफ्ट सिचाई एवं ड्रिप सिंचाई, तालाब पुनर्जीवन और जंगल बचाने की दिशा में आगे बढ़ना चाहता है।

लेकिन यह सिर्फ एक गाँव की कहानी नहीं है।

मनातू प्रखंड के लगभग 72 गाँव आज इसी संकट का सामना कर रहे हैं,जिनमे डुमरी पंचायत के 17 गाँव की स्थिति और भी दयनीय है। कहीं खेत सूख रहे हैं, कहीं महिलाएँ पानी के लिए घंटों मेहनत कर रही हैं, कहीं बच्चे पढ़ाई छोड़ कर बाल मजदूरी कर रहे है , और कहीं पूरा परिवार पलायन के सहारे जी रहा है।

फिर भी इन गाँवों में उम्मीद बाकी है – अगर समय रहते सही सहयोग मिले।

समुदाय को क्या मदद चाहिए?

- जल संरक्षण के लिए तालाब, आहर और चेकडैम निर्माण
- सोलर लिफ्ट, ड्रिप और माइक्रो सिंचाई की सुविधा
- सूखा-रोधी बीज और जलवायु अनुरूप खेती का प्रशिक्षण
- महिलाओं के लिए आजीविका और स्वास्थ्य सहायता
- जंगल संरक्षण और सामुदायिक वन प्रबंधन
- बच्चों की शिक्षा और पोषण सहायता
- स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर ताकि पलायन कम हो सके

मधैया गाँव की यह कहानी उन हजारों ग्रामीण समुदायों की आवाज़ है जो बदलती बारिश और जलवायु परिवर्तन के बीच अपने जीवन, खेती और भविष्य को बचाने की कोशिश कर रहे हैं।

बारिश सिर्फ मौसम नहीं बदल रही – यह लोगों का जीवन, रिश्ते, खेती और आने वाली पीढ़ियों का भविष्य बदल रही है।

मनातू ब्लॉक के कर्मतिल्हा गाँव का सूखा तालाब का दृश्य

बारिश कम होने के कारण अधिकतर जगह पर खेती नही हो पा रहा है और खेत टाड बन्ते चला जा रहा है

सहयोग - महिला समग्र उत्थान समिति डालटनगंज